राम वो जिसके एक सिर, रावण वो जिसके अनेक सिर

आचार्य प्रशांत | Updated on: Oct 23, 2023 | 9:56 PM

आंतरिक विभाजन का ही नाम रावण है और सत्य के अतिरिक्त, आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी है वो विभाजित है. जहां विभाजन है, वहां आप चैन नहीं पा सकते. राम का कोई केंद्र ही नहीं है, जो मुक्त आकाश का हो गया वही राम है. आकाश का केंद्र आप नहीं बता पाएंगे. आकाश में तो तुम जहां पर हो वहीं पर केंद्र है; अनंत है...

Advertisement

Follow us on

Google News

Dussehra 2023: रावण वो नहीं जिसके दस सिर थे. जिसके ही दस सिर हैं, वही रावण, और हममें से कोई ऐसा नहीं है जिसके दस, सौ, पचास, छह हजार सिर ना हों. दस सिरों का अर्थ है एक ना हो पाना, चित्त का खंडित अवस्था में रहना. मन पर तमाम तरीके के प्रभावों का होना और हर प्रभाव एक हस्ती बन जाता है. वो अपनी एक दुनिया बना लेता है. वो एक सिर, एक चेहरा बन जाता है इसीलिए हम एक नहीं होते हैं. रावण को देखो न, महाज्ञानी है पर शिव के सामने जो वो है क्या वही वो सीता के सामने है?

Advertisement

दस की संख्या सांकेतिक है. दस माने दस ही नहीं, नौ माने भी दस, आठ माने भी दस, छह माने भी दस और छह हजार माने भी दस. एक से ज्यादा हुआ नहीं कि दस; अनेक. जो ही अलग-अलग मौकों पर अलग-अलग हो जाता हो, वही रावण है. मजेदार बात ये है कि रावण के दस सिरों में एक भी सिर रावण का नहीं है, क्योंकि जिसके दस सिर होते हैं उसका तो अपना सिर होता ही नहीं. उसके तो दसों सिर प्रकृति के होते हैं, समाज के होते हैं, परिस्थितियों के होते हैं. वो किसी का नहीं हो पाता.

जो अपना ही नहीं है, जिसके पास अपना सिर नहीं है, वो किसी का क्या हो पाएगा! कभी वो आकर्षण के केंद्र से चल रहा है, कभी वो ज्ञान के केंद्र से चल रहा है, कभी वो घृणा के केंद्र से चल रहा है, कभी लोभ के केंद्र से, कभी संदेह के केंद्र से. जितने भी हमारे केंद्र होते हैं, वो सब हमारे रावण होने के द्योतक हैं. रावण वो जिसके अनेक केंद्र हैं और वो किसी भी केंद्र के प्रति पूर्णतया समर्पित नहीं है. एक केंद्र पर है कोई एक खींच रहा है, दूसरे केंद्र पर है तो दूसरा खींच रहा है. इसी कारण वो केंद्र-केंद्र भटकता है, घर-घर भटकता है, मन-मन भटकता है.

Advertisement

राम वो जिसका एक सिर

राम का कोई केंद्र ही नहीं है, जो मुक्त आकाश का हो गया वही राम है. आकाश का केंद्र आप नहीं बता पाएंगे. आकाश में तो तुम जहां पर हो वहीं पर केंद्र है; अनंत है. राम वो जो जहां का है, वहीं का है. अनंतता में प्रत्येक बिंदु, केंद्र होता है. राम वो जो सदा स्वकेंद्रित है, वो जहां पर हैं, वहीं पर केंद्र आ जाता है.

काश कि दशहरे का तीर भीतर को चलता. असल में रावण की पहचान ही यही है कि उसके सारे तीर बाहर को चलते हैं तो जब हम रावण को मारते हैं तो हम रावण होकर के ही मारते हैं. राम तो वो है जो पहले स्वयं मिट गया. जो अभी खुद ना मिटा हो वो रावण को नहीं मिटा पाएगा. रावण के ही तल पर रावण से बैर करना असंभव

है. राम यदि रावण से जीतते आएं हैं तो उसकी वजह बस यही है कि वो रावण के सामने से नहीं, रावण के ऊपर से युद्ध करते हैं.

रावण के सामने जो है वो तो रावण से हारेगा. जो रावणतुल्य ही है वो रावण से कैसे जीतेगा. जिसे पहले दस सिर वाले को हराना हो उसे पहले अपना सिर कटाना होगा. जिसका अपना कोई सिर नहीं, अब वो हजार सिर वाले से जीत लेगा. हम वो हैं, जिनके अपने ही रावणनुमा हजार सिर हैं इसीलिए हमें रावण को मारने में बड़ा मजा आता है और हर साल मारते हैं. मार-मार कर के हर्षित हो जाते हैं कि मर तो ये सकता नहीं.

अमरता के लिए आत्मा होना टेढ़ी खीर!

अब अमरता के लिए आत्मा होना जरा टेढ़ी खीर है; वहां कई तरीके के झंझट- ये छोड़ो, ये ना करो, वो करो. रूप नहीं चलेगा, रंग नहीं चलेगा, व्यसन नहीं चलेगा, विकार नहीं चलेगा. तो अमर होने का एक पिछला दरवाजा है, माया का. माया को भी कौन मार सका आज तक? जब तक संसार है, तब तक माया रहेगी. तो हम उस रूप में फिर अमर हो जाना चाहते हैं. कभी विचार किया आपने, हर साल मारते हो, कभी मार ही दो कि, अब गया. अब इसका श्राद्ध ही हो सकता है पर अब दोबारा मारने की जरूरत नहीं पड़ सकती. हमने श्राद्ध करते तो किसी को देखा नहीं. मरा होता तो चौथा मनाते.

आंतरिक विभाजन का ही नाम रावण है और सत्य के अतिरिक्त, आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी है वो विभाजित है. जहां विभाजन है, वहां आप चैन नहीं पा सकते. उपनिषद् कहते हैं- नाल्पे सुखं, अल्प में सुख नहीं मिलेगा. सिर्फ जो बड़ा है, अनंत है, सुख वहीं है, योवैभूमा तत सुखं. जहां दस हैं, वहां दस में से हर खंड छोटा तो होगा ही न? अनंत होता तो दस कैसे होते, दस अनंतताएं तो होती नहीं.

छोटे होकर जीना, खंडित होकर जीना, दीवारों के बीच जीना, प्रभावों में जीना, इसी का नाम है रावण. शांत हो कर के जीना, विराट हो कर के, आकाश हो कर के

जीना, इसका नाम है राम. जहां क्षुद्रता है, हीनता है, दायरे हैं, वहीं समझ लीजिए राक्षस वास करता है. वहीं पर आपकी सारी व्याधियाँ हैं.

केंद्र गहरा होना चाहिए...

रावण वो जिसने एक ऐसी जगह को केंद्र बना लिया है जिसे गंदा करना आसान है कि कोई आया और जरा सा व्यंग्य कर दिया, तो चोट लग गई. आपने केंद्र ऐसी जगह को बना दिया था जो इतनी सतही है कि उस तक समाज की, दूसरों की चोट पहुंच जाती है.

आपका केंद्र इतना गहरा होना चाहिए कि जैसे पृथ्वी का गर्भ जहां पर आपकी खुर्पी और कुदाल और मशीनें पहुंच ही नहीं सकतीं, या आपका केंद्र इतना ऊंचा होना चाहिए कि जैसे आकाश की गहराई कि जिसको आपका विचार भी ना नाप सकता हो, कि जिस पर कोई पत्थर उछाले तो पत्थर वापस ही आकर के गिरेगा; आप तक नहीं पहुंचेगा.

आप इतने गहरे बैठे हो कि वहां कोई चोट, कोई पत्थर, कोई उलाहना, कोई उपहास पहुंचती ही नहीं, तुम्हें जो करना है कर लो, तुम्हें जितना परेशान करना है कर लो, तुम मुझे खरोंचे तो मार सकते हो, तुम मुझे लहू-लुहान तो कर सकते हो पर तुम मेरे केंद्र तक नहीं पहुंच सकते. वो तुम्हारी पहुंच से बहुत दूर है.

– आचार्य प्रशांत
संस्थापक, प्रशांतअद्वैत संस्था
वेदांत मर्मज्ञ, पूर्व सिविल सेवा अधिकारी